एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 04 (अप्रैल, 2025)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

डिजिटल बैंकिंग: ग्रामीण किसानों के लिए नई उम्मीद की किरण

डॉ. हरकेश कुमार बलाई[1], *हर्षित तक्षक[2], अजय हरदू[2] एवं मोहम्मद मुस्तकीम[2]
[1]सहा. प्रोफेसर, जगन्नाथ विश्वविद्यालय, चाकसू, जयपुर, राजस्थान, भारत
[2]छात्र, बी. एससी. (ऑनर्स), कृषि संकाय, जगन्नाथ विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: taxakharshit@gmail.com

भारत की अर्थव्यवस्था में किसानों की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण रही है, लेकिन लंबे समय तक ग्रामीण क्षेत्रों के किसान आधुनिक बैंकिंग सुविधाओं से वंचित रहे। बदलते समय के साथ, अब डिजिटल बैंकिंग ने किसानों की जिंदगी को आसान और अधिक आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक मजबूत कदम बढ़ाया है।

किसानों के लिए डिजिटल बैंकिंग की विशेषताएं

1. सरकारी सहायता सीधे खाते में: पहले किसानों को सरकारी योजनाओं का लाभ पाने के लिए बिचौलियों के पास जाना पड़ता था। अब डिजिटल बैंकिंग ने इन परेशानियों को कम कर दिया है। किसान अब सरकार द्वारा दी जा रही सब्सिडी या योजनाओं का पैसा सीधे अपने बैंक खाते में पा सकते हैं। इससे न केवल समय की बचत होती है, बल्कि विश्वास और पारदर्शिता भी बढ़ती है।

2. कर्ज और लोन तक आसान पहुंच: किसानों के लिए खेती की लागत लगातार बढ़ रही है, और ऐसे में समय पर कर्ज मिलना बहुत जरूरी होता है। डिजिटल बैंकिंग के ज़रिए किसान अब मोबाइल या नजदीकी सेवा केंद्र से ही लोन के लिए आवेदन कर सकते हैं। बैंकिंग प्रक्रिया अब ज्यादा सरल, तेज़ और कागज रहित हो गई है।

3. पैसों का लेन-देन अब उंगलियों पर: अब किसान भी UPI, मोबाइल वॉलेट और आधार आधारित भुगतान सिस्टम (AEPS) का इस्तेमाल कर रहे हैं। इससे उन्हें दूर बाजार जाने की जरूरत नहीं पड़ती, और वे अपने गांव में रहकर ही पैसे भेजने, लेने या बिल भरने जैसे काम कर सकते हैं।

4. भविष्य के लिए बचत की आदत: डिजिटल बैंकिंग से जुड़ने के बाद किसानों में बचत की सोच बढ़ी है। मोबाइल बैंकिंग और एसएमएस अलर्ट जैसी सुविधाओं ने उन्हें अपने खातों पर नजर रखने की शक्ति दी है, जिससे वे खर्च और बचत को बेहतर ढंग से समझ पा रहे हैं।

5. बीमा और सुरक्षा का कवच: आज डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से किसान फसल बीमा, जीवन बीमा और जनधन जैसी योजनाओं का लाभ उठा पा रहे हैं। प्राकृतिक आपदा या फसल खराब होने की स्थिति में वे आसानी से क्लेम कर सकते हैं और नुकसान की भरपाई पा सकते हैं।

6. बाजार तक सीधी पहुंच: डिजिटल तकनीक ने किसानों को बाजार भाव, मौसम की जानकारी और कृषि विशेषज्ञों से संपर्क की सुविधा दी है। अब किसान अपने उत्पाद को ई-मार्केट जैसे प्लेटफॉर्म पर सीधे बेच सकते हैं, जिससे उन्हें अच्छा दाम और सही ग्राहक मिलते हैं।

किसानों के लिए सरकार की डिजिटल बैंकिंग संबंधित योजनाएँ

1. **किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) योजना**

- किसानों को डिजिटल माध्यम से सस्ती दरों पर ऋण (लोन) उपलब्ध कराया जाता है।
- अब KCC के लिए ऑनलाइन आवेदन की सुविधा उपलब्ध है।
- किसान बैंक ऐप्स और पोर्टल के माध्यम से क्रेडिट लिमिट की जानकारी ले सकते हैं।

2. **पीएम किसान सम्मान निधि योजना (PM-KISAN)**

- पात्र किसानों को प्रतिवर्ष ₹6000 की सहायता राशि सीधे उनके बैंक खातों में डिजिटल ट्रांसफर की जाती है।
- आवेदन, स्थिति जांच व भुगतान विवरण पोर्टल और मोबाइल ऐप के माध्यम से उपलब्ध हैं।

3. डिजिटल इंडिया पहल के तहत किसान सेवा पोर्टल

- किसान डिजिटल माध्यम से बैंकिंग सेवाओं, लोन, बीमा और अन्य वित्तीय सेवाओं की जानकारी ले सकते हैं।
- मोबाइल ऐप्स व कॉमन सर्विस सेंटर (CSC) के माध्यम से भी सुविधा दी गई है।

4. भारतीय रिज़र्व बैंक की "फाइनेंशियल लिटरेसी अभियान"

- किसानों को डिजिटल बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग और यूपीआई लेनदेन की जानकारी देने के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।
- गाँवों में डिजिटल बैंकिंग शिविर आयोजित किए जाते हैं।

5. ई-नाम (e-NAM) प्लेटफॉर्म

- किसान मंडियों में फसल बेचने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग कर सकते हैं।
- भुगतान सीधे किसानों के बैंक खातों में डिजिटल माध्यम से किया जाता है।

6. UPI और आधार इनेबल्ड पेमेंट सिस्टम (AePS)

- किसान अपने आधार कार्ड के माध्यम से बैंक खातों से सीधा लेन-देन कर सकते हैं।
- नकदी निकालना, पैसा भेजना और बैलेंस जांचना अब आसान हो गया है।

7. प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY)

- किसानों को बीमा प्रीमियम का भुगतान व दावे का निपटारा डिजिटल माध्यम से किया जाता है।
- पोर्टल व मोबाइल ऐप से बीमा की स्थिति ट्रैक की जा सकती है।

निष्कर्ष

डिजिटल बैंकिंग ने ग्रामीण भारत, खासकर किसानों की जिंदगी में एक सकारात्मक बदलाव लाया है। यह केवल एक तकनीक नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता की ओर एक मजबूत कदम है। यदि इस बदलाव को और सशक्त किया जाए तो आने वाले समय में भारत के गांव भी आधुनिकता की मिसाल बन सकते हैं।